शिखर 8

इकाई 1: जीवन और जगत

पाठ 1. कोई नहीं पराया

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य एकता, प्रेम, भाईचारा और आपस में मिल-जुलकर रहने का संदेश देना है। यह कविता 'वसुधैव कुटुंबकम' की सीख देती है। हमें भेदभाव को मिटाकर आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।

कविता का सारांश

कवि गोपालदास 'नीरज' इस कविता में परस्पर प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हुए कहते हैं कि यह सारा संसार मेरा परिवार है, यहाँ कोई भी पराया नहीं है। मैं देशकाल, जाति-पाति, धर्म-संप्रदाय, ऊँच-नीच या भाषा की भिन्नता को नहीं मानता। मैं तो केवल मानव का पूजक हूँ। कोई कहीं भी रहे, मुझे हर मानव प्यारा लगता है। मुझे मानवता पर गर्व है। मैं स्वर्ग के सुख की कहानियाँ नहीं सुनना चाहता क्योंकि मेरी धरती माता सौ-सौ स्वर्गों से भी ज्यादा अच्छी है। मैं सबको 'जियो और जीने दो' की सीख देता हूँ। इस संसार मैं सबको आपस में प्यार बाँटने का संदेश देता हूँ। यहाँ इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करो कि किसी कमज़ोर वर्ग को कोई कष्ट न हो। हमारे इस सुखी जीवन में जगत के अन्य लोगों का भी हिस्सा हो। अर्थात् कवि यह मानते हैं कि मानव से पहले वह विश्वरूपी समाज का हिस्सा है। यहाँ कोई पराया नहीं है।

अध्यापन संकेत

बच्चों से **पठन-पूर्व चर्चा** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न पूछें। उन्हें कविता से संबंधित जीवन-मूल्यों से अवगत करवाते हुए इसका वाचन करवाएँ। प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझाएँ। बीच-बीच में छोटे-छोटे प्रश्न पूछें। उन्हें मानवता की सीख देते हुए मिल-जुलकर रहने के लिए प्रेरित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- बच्चों से पूछें– क्या वे कक्षा, घर या बाहर आपस में मिल-जुलकर रहते हैं?
- किसी दुखी व्यक्ति को देखकर उनके मन में कैसे भाव जागृत होते हैं?
- बच्चों को बताएँ कि आपसी भाईचारे से समाज या देश को मजबूती मिलती है।
- उन्हें बताएँ कि हमें सभी को समान समझना चाहिए तथा किसी से भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- कविता के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।